



मधुबन

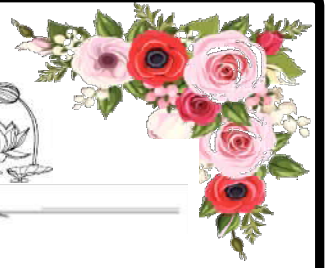
ओम् शान्ति

अंक 366

जनवरी 2023



पत्र-पुष्प



Happy New Year 2023

**“अव्यक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए एकान्त में रह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ाओ”
दादी जी की शुभ प्रेरणायें 20-12-22**

परमप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी, सर्व सम्बन्धों की रसनायें एक से लेने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ नये वर्ष की नये उमंग-उत्साह भरी बधाईयां।

नया वर्ष नया उमंग-उत्साह लेकर समीप आ रहा है। इस नये वर्ष की बधाईयों के साथ नये स्वर्णिम युग की भी सबको ढेर सारी शुभ कामनायें। अभी अपना वह सुनहरा युग, सतयुग आया कि आया। ऐसे लगता जैसे सिर्फ एक पांव आगे रखने की जरूरत है। प्रत्यक्षता और परिवर्तन के साथ हम सब पहले अपने घर चलेंगे फिर अपनी नई राजधानी में आयेगे। बोलो, वह नज़ारा नयनों के सामने घूम रहा है ना। संगमयुग का भाग्य भी कोई कम नहीं है, जबकि स्वयं भगवन की दिव्य पालना में हम सभी पल रहे हैं। तुम्हीं संग बैठें, तुम्हीं संग खेलें, खाऊं...। बाबा के हर बच्चे के दिल में दिलाराम की यादें समाई रहती हैं, साथ-साथ जनवरी मास भी हम सबको ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की प्रेरणायें देता है। पूरा ही मास सभी विशेष अन्तर्मुखता की गुफा में बैठ अव्यक्त वतन की सैर करते हैं। बाबा भी यही इशारा दे रहे हैं कि बच्चे, अब अलबेलेपन और आलस्य को छोड़ संगम के अमूल्य समय और संकल्प के खजाने को बचाओ। अब तीव्र पुरुषार्थ की रेस करो। सेवाओं की हलचल में आते, अण्डरग्राउण्ड जाने का अभ्यास करो। जैसे कोई भी शक्तिशाली इन्वेंशन अन्डरग्राउण्ड करते हैं। तो आप बच्चे भी अपनी शक्तिशाली स्थिति बनाने के लिए एकान्तवासी बनो, एकाग्रता का अभ्यास करो। कार्य-व्यवहार में आते बीच-बीच में 5 मिनट भी समय मिले तो सागर के तले में चले जाओ। अब फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए मन की एकाग्रता पर विशेष अटेन्शन दो। संकल्प रूपी फाउण्डेशन को मजबूत बनाओ तब अव्यक्ति कशिश आयेगी। अभी तक ज्ञान सागर की लहरों में लहराने का अनुभव तो किया है, अब अन्दर तले में जाकर अमूल्य खजानों से स्वयं को भरपूर करो। एकाग्रता से अनेक सिद्धियां प्राप्त होती हैं। संकल्पों को स्टॉप कहो और स्टॉप हो जाए तब वरदानी रूप में जय-जयकार के नारे लगेगे। इसके लिए बाबा कहते बच्चे, व्यर्थ वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल से परे एक में सर्व रस लेने वाली एकरस स्थिति बनाओ।

बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख इस जनवरी मास में विशेष तपस्या करेंगे ना। देश विदेश के सभी बाबा के तपस्वी बच्चे एक ही संकल्प में एक जैसी स्थिति में स्थित हो योग अभ्यास करेंगे तो संगठन के वायब्रेशन से शक्तिशाली वायुमण्डल बनेगा। इसके लिए मधुबन घर से विशेष पुरुषार्थ की प्वाइंट्स भेजी जा रही हैं, सभी उसी प्रमाण अटेन्शन रख योग तपस्या करना जी। हमारी सम्पन्नता ही परिवर्तन के समय को समीप लायेगी और चारों ओर प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेगे।

बाकी आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी एक दो खुशियों भरी बधाईयां देते हुए
उमंग-उत्साह में उड़ते चलो। अच्छा - सबको याद....



ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. रतनमोहिनी





ये अव्यक्त इशारे



एकाग्रता को अपनाओ, एकान्तप्रिय बनो

1) बापदादा चाहते हैं कि हर बच्चा एकरस श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी, एकान्तवासी, अशरीरी, एकता स्थापक, एकनामी, एकाँनामी का अवतार बने। एक दो के विचारों को समझ, सम्मान दे, एक दो को इशारा दे, लेन-देन कर आपस में संगठन की शक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करे। अव्यक्त स्थिति को बढ़ाने के लिए एकान्त में रुचि रखे। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनायें एक से लेने वाला ही एकान्त-प्रिय हो सकता है।

2) एकान्तप्रिय तब बन सकेंगे जब अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ होगा और एक के ही प्रिय होंगे। एक प्रिय होने कारण एक की ही याद में रह सकते। एकान्तप्रिय अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाले ही एकान्त-प्रिय हो सकते हैं। एकाग्रता अर्थात् सदा निरव्यर्थ संकल्प, निर्विकल्प।

3) जैसे अन्दरग्राउण्ड सारी कारोबार चलती है, वैसे अन्तर्मुखी होकर हर कार्य करो। इससे एक तो विघ्नों से बचाव, दूसरा समय का बचाव, तीसरा संकल्पों का बचाव वा बचत हो जायेगी। एकान्तवासी के साथ रमणीकता भी इतनी ही हो। इन दोनों शब्दों में बहुत अन्तर है, लेकिन सम्पूर्णता में दोनों की समानता रहे, जितना ही एकान्तवासी उतना ही फिर साथ-साथ रमणीकता भी हो। एकान्त में रमणीकता गायब नहीं होनी चाहिए। दोनों समान और साथ-साथ रहें। अभी-अभी एकान्तवासी, अभी-अभी रमणीक, जितनी गम्भीरता उतना ही मिलनसार अर्थात् सर्व के संस्कार और स्वभाव से मिलने वाला।

4) जितना अन्दरग्राउण्ड अर्थात् अन्तर्मुखी रहेंगे उतना नई-नई इन्वेंशन वा योजनायें निकाल सकेंगे। अन्दरग्राउण्ड रहने से एक तो वायुमण्डल से बचाव हो जायेगा, दूसरा एकान्त प्राप्त होने के कारण मनन शक्ति भी बढ़ेगी। तीसरा कोई भी माया के विघ्नों से सेफ्टी का साधन बन जायेगा।

5) स्वयं का कल्याण करने के लिए वा स्वयं का परिवर्तन करने के लिए विशेष एकान्तवासी, अन्तर्मुखी बनो। नॉलेजफुल

के साथ पॉवरफुल बनो। हर बात के अनुभव में स्वयं को सम्पन्न बनाओ। किसका बच्चा हूँ? क्या प्राप्ति है? इस पहले पाठ के अनुभवीमूर्त बनो तो सहज ही मायाजीत हो जायेंगे।

6) जैसे कोई इन्वेंटर कोई भी इन्वेंशन निकालने के लिए एकान्त में रहते हैं। तो यहाँ की एकान्त अर्थात् एक के अन्त में खोना है। तो बाहर की आकर्षण से एकान्त चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ कमरे में बैठने की एकान्त चाहिए, लेकिन मन एकान्त में हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है।

7) एकान्तवासी बनना अर्थात् चारों ओर के वायुब्रेशन से परे चले जाना। कई ऐसे होते हैं जिन्हें एकान्त पसन्द नहीं आता, संगठन में रहना, हंसना, बोलना ज्यादा पसन्द आता, लेकिन यह हुआ बाहरमुखता में आना। अभी अपने को एकान्तवासी बनाओ अर्थात् सर्व आकर्षण के वायुब्रेशन से अन्तर्मुख बनो। अब समय ऐसा आ रहा है जो यही अभ्यास काम में आयेगा। अगर बाहर की आकर्षण के वशीभूत होने का अभ्यास होगा तो समय पर धोखा दे देगा।

8) एकान्तवासी अर्थात् अनुभवी मूर्त। वर्तमान समय के प्रमाण अभी वानप्रस्थ अवस्था के समीप हो। वानप्रस्थी गुड़ियों का खेल नहीं करते हैं। वानप्रस्थी एकान्त और सुमिरण में रहते हैं। तो आप सब बेहद के वानप्रस्थी सदा एक के अन्त में अर्थात् निरन्तर एकान्त में सदा स्मृति स्वरूप रहो।

9) जितना सेवा की हलचल में आते हो उतना बिल्कुल अण्डरग्राउण्ड चले जाओ। कोई भी नई इन्वेंशन और शक्तिशाली इन्वेंशन अण्डरग्राउण्ड ही करते हैं तो एकान्तवासी बनना ही अण्डरग्राउण्ड है। जो भी समय मिले, इकट्ठा एक घण्टा वा आधा घण्टा समय नहीं मिलेगा लेकिन बीच में 5 मिनट भी मिले तो सागर के तले में चले जाओ। जो आने वाला भी समझेगा कि यह कहाँ और स्थान पर है, यहाँ नहीं है। उनके भी संकल्प ब्रेक में आ जायेंगे। वाणी में आना चाहेंगे तो आ नहीं सकेंगे।

10) एकान्तवासी अर्थात् सदा स्थूल एकान्त के साथ-साथ एक के अन्त में रहना। एकाग्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा का मैसेज उस आत्मा तक पहुँचा सकते हो। किसी भी आत्मा का आह्वान कर सकते हो। किसी भी आत्मा की आवाज को कैच कर सकते हो। किसी भी आत्मा को दूर बैठे सहयोग दे सकते हो।

11) एकान्तवासी का डबल अर्थ है। सिर्फ बाहर की एकान्त नहीं लेकिन एक के अन्त में खो जाना, एकान्त। नहीं तो सिर्फ बाहर की एकान्त होगी तो बोर हो जायेंगे, कहेंगे – पता नहीं दिन कैसे बीतेगा! लेकिन एक बाप के अन्त में खो जाओ। जैसे सागर के तले में चले जाते हैं तो कितना खजाना मिलता है। ऐसे एक के अन्त में चले जाओ अर्थात् बाप से जो प्राप्तियाँ हुई हैं उसमें खो जाओ।

12) कोई भी कार्य करते व पार्ट बजाते सागर समान ऊपर से भले हलचल दिखाई दे लेकिन अन्दर की स्थिति नथिंग न्यु की हो। रचयिता और रचना के अन्त को जानने वाले त्रिकालदर्शी आराम से शान्ति की स्टेज पर ऐसे स्थित हो जाएं जो कोई भी कर्मेन्द्रियों की हलचल आन्तरिक स्टेज को हिला न सके।

13) जब आत्मिक शक्ति वाली, सेमी प्योर आत्मायें अपनी साधना द्वारा आत्माओं का आह्वान कर सकती हैं, अल्पकाल के साधनों द्वारा दूर बैठी हुई आत्माओं को चमत्कार दिखाकर अपनी तरफ आकर्षित कर सकती हैं, तो परमात्म शक्ति अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शक्ति क्या नहीं कर सकती परन्तु इसके लिए विशेष एकाग्रता का अभ्यास बढ़ाओ। जैसे शक्तियों के जड़ चित्रों में वरदान देने का स्थूल रूप हस्तों के रूप में दिखाया है, हस्त भी एकाग्र रूप दिखाते हैं। वरदान का पोज़ हस्त, दृष्टि और संकल्प एकाग्र दिखाते हैं, ऐसे चैतन्य रूप में एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, तब रूह, रूह का आह्वान करके रुहानी सेवा कर सकेगी।

14) जो भी आत्मायें वाणी द्वारा व प्रैक्टिकल लाईफ के प्रभाव द्वारा सम्पर्क में आई हैं, वा सम्पर्क में आने के उम्मीदवार हैं, उन आत्माओं को रुहानी शक्ति का अनुभव कराओ। जैसे भक्त लोग स्थूल भोजन का व्रत रखते हैं, तो सर्विसएबल ज्ञानी तू आत्माओं को व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म की हलचल से परे एकाग्रता अर्थात् रुहानियत में रहने का व्रत लेना है तब आत्माओं को ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखा सकेंगे।

15) अभी एकाग्रता का दृढ़ संकल्प करने वाला ग्रुप तैयार होना चाहिए, जो सागर के तले में जाकर अनुभव के हीरे, मोती लेकर आये। लहरों में लहराने का अनुभव तो किया अब अन्दर तले में जाना है। अमूल्य खजाने तले में मिलते हैं, इससे आटोमेटिक सब बातों से किनारा हो जायेगा।

16) एकाग्रता की शक्ति बहुत विचित्र रंग दिखा सकती है। एकाग्रता से ही सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। स्वयं की औषधि भी एकाग्रता की शक्ति से कर सकते हो। अनेक रोगियों को निरोगी भी बना सकते हो। कोई ने चलती हुई चीज़ को रोका, यह एकाग्रता की सिद्धि है। संकल्पों को स्टॉप कहो और स्टॉप हो जाएं तब वरदानी रूप में जय-जयकार के नारे बजेंगे।

17) बुद्धि की एकाग्रता से परखने की शक्ति आयेगी। इसके लिए व्यर्थ वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल से परे एक में सर्व रस लेने वाली एकरस स्थिति चाहिए। अगर अनेक रसों में बुद्धि और स्थिति डगमग होती है तो परखने की शक्ति कम हो जाती है और न परखने के कारण माया अपना ग्राहक बना देती है। यह माया है, यह भी पहचान नहीं सकते। यह रांग है, यह भी जान नहीं सकते।

18) साकार रूप में ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए मन की एकाग्रता पर अटेंशन दो। आर्डर से मन को चलाओ। मालिकपन के स्टेज की सीट पर, भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ स्थितियों की सीट पर सेट रहो। मन में जब कोई कमजोर संकल्प उत्पन्न हो तो उसे वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनो। संकल्प रूपी फाउण्डेशन को मजबूत बनाओ तब अव्यक्ति कशिश आयेगी।

19) आप आलमाइटी गवर्नेन्ट के मैसेन्जर हो, कोई से भी डिस्कस में अपना माइन्ड डिस्टर्ब नहीं करना। किसी भी बात से अपने चेहरे पर वा मन की स्थिति में अन्तर नहीं लाना। मन्त्र सदा याद रखना। जब कोई ऐसी बात सामने आये तो अपने आत्मिक दृष्टि का नेत्र और मन्मनाभव का मन्त्र प्रयोग करना तो वह बात समाप्त हो जायेगी।

20) बुद्धि को एकाग्र करने के लिए मनमनाभव के मंत्र को सदा स्मृति में रखो। मनमनाभव के मंत्र की प्रैक्टिकल धारणा से पहला नम्बर आ सकते हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है। मन्सा सेवा करने के लिए एकाग्रता का अभ्यास चाहिए। इसके लिए व्यर्थ समाप्त

हो, सर्व शक्तियों का अनुभव जीवन का अंग बन जाये। जैसे बाप परफेक्ट है ऐसे बच्चे भी बाप समान हों, कोई डिफेक्ट न हो।

21) जैसे आजकल अगर कोई कंट्रोल में नहीं आता है, बहुत तंग करता है, उछलता है या पागल हो जाता है तो उनको ऐसा इन्जेक्शन लगा देते हैं जिससे वह शान्त हो जाता है। ऐसे अगर संकल्प शक्ति आपके कंट्रोल में नहीं आती है तो अशरीरी भव का इन्जेक्शन लगा दो, बाप के पास बैठ जाओ। तो संकल्प शक्ति व्यर्थ नहीं उछलेगी। जहाँ एकाग्रता होगी वहाँ स्वतः ही एकरस स्थिति होगी।

22) एकाग्रता अर्थात् एक ही श्रेष्ठ संकल्प में सदा स्थित रहना। जिस एक बीज रूपी संकल्प में सारा वृक्ष रूपी विस्तार समाया हुआ है। एकाग्रता को बढ़ाओ तो सर्वप्रकार की हलचल समाप्त हो जायेगी। एकाग्रता के आधार पर जो वस्तु जैसी है, वैसी स्पष्ट देखने में आयेगी। ऐसी एकाग्र स्थिति में स्थित होने वाला स्वयं जो है, जैसा है अथवा जो वस्तु जैसी है वैसी स्पष्ट अनुभव होगी।

23) आजकल की दुनिया में राजनीति की हलचल, वस्तुओं के मूल्य की हलचल, करेन्सी की हलचल, कर्मभोग की हलचल, धर्म की हलचल – ऐसे सर्वप्रकार की हलचल से हर एक तंग आ गये हैं। इससे बचने के लिए एकाग्रता को अपनाओ, एकान्तवासी बनो। एकान्तवासी से एकाग्र सहज ही हो जायेंगे।

24) परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने का साधन है - माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है, जिसको परखने के लिए एकाग्रता अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ। साइलेन्स की शक्ति हाहाकार से जयजयकार करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति सदा आपके गले में सफलता की मालायें पहनायेंगी।

25) एकाग्रता और दृढ़ता ही सहज सफलता की चाबी है। जहाँ अनेक श्रेष्ठ आत्माओं के एकाग्रता की शक्ति संगठित रूप में है वहाँ श्रेष्ठता और स्पष्टता के साथ सफलता समाई हुई है ही। दृढ़ता की निशानी सफलता है। जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता न हो, यह हो नहीं सकता।

26) मन की एकाग्रता ही एकरस स्थिति का अनुभव करायेगी। एकाग्रता की शक्ति द्वारा अव्यक्त फरिश्ता स्थिति का सहज अनुभव कर सकेंगे। एकाग्रता की शक्ति, मालिकपन की शक्ति

सहज निर्विघ्न बना देगी। एकाग्रता अर्थात् मन को जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो उतना समय एकाग्र कर लो। मन वश में हो।

27) मन की एकाग्रता के लिए सेकेण्ड बाई सेकेण्ड ड्रामा की पटरी पर चलते रहो। जिस रीति से, जैसा ड्रामा चल रहा है उसी के साथ-साथ मन की स्थिति चलती रहे। जरा भी हिले नहीं। मन अर्थात् संकल्प शक्ति को ब्रेक लगाने और मोड़ने की पॉवर हो। इससे बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं जायेगी, एनर्जी जमा होगी। जितना मन-बुद्धि की शक्ति जमा होगी उतना परखने वा निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।

28) मन को कंट्रोल करने के लिए मन को अर्पण कर पूरा सरेण्डर हो जाओ। फिर मन में अपने अनुसार संकल्प उठा नहीं सकते। जिसने मन भी बाप को दे दिया वह सहज मनमनाभव हो जायेंगे। मनमनाभव होने से सहज मोहजीत बन जायेंगे। मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प, विकल्पों को समर्पण करना।

29) जब जैसी स्थिति बनाना चाहें वैसी स्थिति बनाने के लिए मन को ड्रिल करानी है। एक सेकेण्ड में आवाज में आयें, एक सेकेण्ड में आवाज से परे हो जाएं। एक सेकेण्ड में कार्य प्रति शारीरिक भान में आयें फिर एक सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें। जब यह ड्रिल पक्की हो तब हर परिस्थिति का सामना कर सकेंगे।

30) समय प्रमाण अब संकल्पों को समेटने की शक्ति धारण करो, संकल्पों के विस्तार का बिस्तर बन्द करते चलो तब औरों के संकल्पों को समझ सकेंगे। नयनों के इशारों से भी किसके मन के भाव को जान लेंगे। जैसे बापदादा के सामने आते हो तो बिना सुनाये हुए भी आप सभी के मन के संकल्प, मन के भावों को जान लेते हैं। वैसे ही आप बच्चों को भी यह अन्तिम कोर्स पढ़ना है।

31) जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो चलते-फिरते ट्रैफिक को भी रोक कर तीन मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं। ऐसे आप भी कोई कार्य करते हो या बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करने का अभ्यास करो। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को, चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करो तो संकल्प शक्तिशाली बन जायेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुवन

**“पुरुषार्थ में सदा एलर्ट और एवररेडी रहो तो
अन्त मति सो गति अच्छी होगी” (गुल्जार दादी जी 05-08-07)**

देखो, बाबा का हम बच्चों से कितना प्यार है। बच्चों की जरा भी कमी देख नहीं सकता है। जिससे भी प्यार होता है, उसकी छोटी-भी कोई ऐसी वैसी बात सुनेंगे तो बुरा लगेगा। आपकी नहीं है, है दूसरे की लेकिन ऐसी बुरी लगेगी, जैसे मेरी है। तो बाबा का तो आत्मिक प्यार है, परमात्म प्यार है। तो बाबा ने यह विशेष प्रोग्राम बनाया कि जो भी कमजोरियाँ हैं, कमियाँ हैं... क्योंकि यह अन्तिम काल है और सबका अन्तिम काल आना ही है। फिक्स नहीं है, कभी भी किसी के पास आ सकता है। मम्मा का बहुत अच्छा एक स्लोगन था - “हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझो।” तो अन्तिम घड़ी में और कुछ याद नहीं आवे, कोई देवता याद आवे, अच्छी बातें याद आवें क्योंकि अन्त मति सो गति होती है ना। एवररेडी रहेंगे तो अन्त सुहानी होगी।

बाबा की ऐसी एलर्ट रहने की नेचर थी तो बच्चों को भी एलर्ट रखता था। तो हमें भी अभी ऐसा एलर्ट रहना चाहिए क्योंकि बाबा को बिल्कुल सुस्ती अच्छी नहीं लगती थी। कैसा भी पेपर आवे, उसमें हम पास होकर दिखावें। करेंगे, देखेंगे... यह शब्द बाबा को बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं। लेकिन अगर बाबा से प्यार है, वो तो सबका 100 परसेन्ट है, उसके लिए तो बाबा ने हमें सर्टीफिकेट दिया। बाकी और कोई सबजेक्ट में ऐसी रिजल्ट नहीं है। बाबा से प्यार है तब तो मजबूरी से ही सही, चल रहे हैं। परन्तु प्यार का रिटर्न केवल इतना ही नहीं होगा। बाकी जो सबजेक्ट रहे हुए हैं, उसमें भी समान तो बनना पड़ेगा ना।

बाबा कहते मुझे और कोई रिटर्न नहीं चाहिए, एक शब्द में तुम अपने को टर्न कर लो। टर्न और रिटर्न। इसमें फायदा तो हमको ही होगा, तब बाबा कहते अपने को टर्न करो, इसमें दूसरे को नहीं देखना होता है क्योंकि अपने को बचाने के लिए, अपनी गलती दूसरे के ऊपर रखेंगे। दूसरे को देखके करने से दूर की नज़र तेज हो जाती है। फिर दूसरे की गलती सहज दिखाई देती है तो कहते हैं ये तो यह भी करते हैं इसलिए सब चलता है, होता है। अब चलेगा तो सही क्योंकि सब नम्बरवार हैं लेकिन मेरे को क्या देखना है? तो जो दूसरों को ज्यादा देखते हैं, उन्हीं के आधार पर जो अपनी गलती भी उनके ऊपर छोड़ने की कोशिश करते हैं, वो आलस्य और अलबेले हो जाते हैं। “मैंने किया” अन्दर समझ

रहे हैं लेकिन बाहर से सिद्ध जो करेंगे वो यह कहेंगे यह हुआ ना, यह किया ना... इसलिए हुआ। यही तो पेपर है ना, हमारे सामने छोटी-छोटी बातों के माध्यम से पेपर आते हैं। जहाँ भी जायेंगे, वहाँ यह पेपर आयेंगे जरूर, कोई-न-कोई रूप चेंज होकर। इसलिए खुद को बदलो, बदलके औरों का बदलो, इसके लिए बदलना है ज्ञान और योग के हिसाब से न कि सेन्टर के हिसाब से या साथी के हिसाब से। तो यह थोड़ी हिम्मत रखो। थोड़ी-सी बात हुई तो क्या करें, कैसे करें... वेस्ट थॉट शुरू होते हैं।

बाबा ने कहा किसकी फालतू बातें गन्दी बातें सुनना यह भी वास्तव में पाप है क्योंकि हमने अपना टाइम तो वेस्ट किया। सुनने से कुछ न कुछ बात याद आती है इसलिए बाबा कहते युक्ति से अपने को टालने की कोशिश करो। अभी यह सब बातें भूलके सेकण्ड में अशरीरी हो जाने की प्रैक्टिस करो। मन ने माना, कंट्रोल हुए संकल्प? अपने को आत्मा समझके बाबा के मिलन में खो जाने का अभ्यास और अनुभव हुआ? इसके लिए कन्ट्रोलिंग पॉवर बहुत चाहिए तभी पास विथ ऑनर बनेंगे। केवल आप 33 मार्क्स से खुश नहीं होना। इसके लिए यह अभ्यास बिल्कुल नहीं छोड़ना है। मैं आत्मा परमधाम में ज्योति बिन्दू... बस इसी में खो जाने का अभ्यास यहाँ बहुत करो। इसी से आप में कन्ट्रोलिंग पॉवर आयेगी, तो फिर यह जो भाव-स्वभाव, व्यर्थ संकल्प हैं वो सब खत्म हो जायेंगे। अभी खास स्व-परिवर्तन के लिए भट्टी के नाम से जो शुभ अवसर मिला है, उसका पूरा लाभ उठाओ।

सेन्टर पर हमेशा किसी से भी जब मिलते हो तो दिल से खुश होके मुस्कराके मीठे बोल बोलते हुए मिलो तब सेन्टर को ताकत आयेगी। इसलिए इसमें दृढ़ रहो तो यही गिफ्ट सफलता दिलाने का काम करेगी। इस दृढ़ता रूपी चाबी को आप सम्भालके रखना क्योंकि माया इसी को चोरी करती है। इस चाबी को अपनी बुद्धि में माया से छूपाके रख देना और जब भी काम पड़े तो उस दृढ़ता रूपी चाबी को यूज करना यानि गँवा नहीं देना। आप यह दृढ़ संकल्प करो कि हमें नम्बरवन जाना ही है क्योंकि सब रेस करेंगे और आप रह जायेंगी तो अच्छा नहीं है। सभी यही संकल्प करके गये हैं, क्योंकि बाबा को दूसरा नम्बर अच्छा

नहीं लगता है। बाबा खुद एक नम्बर है ना, तो बाबा को एक नम्बर ही अच्छा लगता है। इसलिए अगर आप सबका एक ही विचार है तो ताली बजाओ, मैं बाबा को कहूँगी बाबा, यह भी नम्बरवन गुप होके ही दिखायेगा। ठीक है, ओ.के. कहना माना बाप और किंगडम को याद करना। इसमें और कुछ कथा नहीं करना अर्थात् इसमें बाबा से और कुछ बातें नहीं करना, न ही कोई बहाना देना लेकिन रोज ओ.के. कहने से सारा दिन आपका ओ.के. होगा क्योंकि अमृतवेले बाबा कहते आँख खोलते जो चीज़ देखी जाती है, जो कोई अच्छा मिलता है तो सारा दिन अच्छा बीतता है और सुबह-सुबह ऐसा वैसा देख लिया, तो कहते हैं पता नहीं किसकी शकल देखी, सारा दिन मेरा खराब गया। आप तो पहले-पहले उठते ही किसको देखती हो? बाबा

को। और बाबा को ओ.के. करते रहना। ठीक है! बाबा तो हमको बतायेगा रिजल्ट कि ओ.के. किया या सो गये या झुटका खाया, यह तो रिपोर्ट आयेगी ना। तो प्यार से परिवर्तन करना ही है, अभी इसमें टाइम क्यों लगायें? करना ही है, यह पाठ यहाँ पक्का करके जाओ। होना ही है, करना ही है। अच्छा!

अभी चलो बाबा के पास जाके बैठते हैं। मैं आत्मा ज्योतिबिन्दू, बाबा भी परमधाम में परम आत्मा ज्योतिबिन्दू... बस, परमधाम में जाके बाबा के साथ बैठ गये... तो कितना मजा आयेगा! वहाँ देखो स्टेज पर आने के लिए कितना माथा मारते हैं, बाबा की दृष्टि लेने के लिए, यह तो बाबा के साथ जाके बैठेंगी ना। अभी सारा टाइम परमधाम में बैठो या नशे में रहो मैं कौन-सी आत्मा हूँ, इन दोनों स्मृतियों में रहना। अच्छा।

दादी जानकी जी के अनमोल वचन

**इन अन्तिम घड़ियों में त्याग, तपस्या वाली सेवा करो,
तो मनी टाइम एनर्जी सब बचेगा**

(2006)

त्याग वृत्ति से अनासक्त वृत्ति होती है और त्याग वृत्ति, वैराग्य वृत्ति से होती है। अनासक्त वृत्ति, श्रेष्ठ वृत्ति फिर उपराम वृत्ति, उस वृत्ति से वायुमण्डल बनता है, यह स्टेप्स हैं। जरा भी वैराग्य कम है, कोई हृद के व्यक्ति, वैभव से राग है, तो न त्याग है, न तपस्या है। सेवा भले है।

अन्त समय साक्षात्कार किसका होगा? त्याग, तपस्या मूर्ति का होगा। भक्ति में पहले लाइट आती है तब साक्षात्कार होता है, लाइट पहले देह से अलग कर देती है, फिर साक्षात्कार होता है।

एक भाई बहुत भक्त था, उसने न भजन गाया, न पूजा पाठ किया पर शकल चमक रही थी। वह मेरे बाप समान था। मैंने कहा आपने भजन भी नहीं किया, कुछ भी नहीं किया, तो आपने क्या किया? चेहरा ऐसा कैसे चमक रहा है। कहा मैं सुबह को उठकर विष्णु का ध्यान करता हूँ, भक्ति हो तो ऐसी। न हवन, न पाठ, न पूजा कुछ नहीं किया।

बाबा ने आज बहुत अच्छी शिक्षा दी है, बाबा शिक्षा, समझानी, सावधानी हर मुरली में देता है। कोई मुरली ऐसी नहीं होती जिसमें शिक्षा, समझानी, सावधानी न हो। बाबा की कई बातें दृश्य रूप में सामने आती हैं, बच्ची तुम यह नहीं कर सकती हो। जी बाबा। बाबा साधारणता में नहीं ले आना चाहता है,

महान आत्मा बनाने चाहता है।

बाबा के पहले-पहले बोल हैं - सी फादर, फालो फादर। सारे यज्ञ की हिस्ट्री में एक क्षण पल भी निष्फल होने नहीं दिया है। सी फादर और फालो फादर किया है। बाबा ने कहा लाइट रहो, माइट खींचते रहो, तो आटोमेटिक फरिश्ता रूप नज़र आयेगा, अपने को फीलिंग आयेगी, धरती पर पांव नहीं हैं। उड़ती कला है। चढ़ती कला का समय पूरा हो गया। चढ़ती कला में थकावट होती है तो थोड़ा रुक जाते हैं। यह भी अपनी स्थिति में, चार्ट में देखें। थोड़ी भी थकावट मन में हुई सो तन पर आई। मन में क्यों आई? कई प्रकार के संकल्पों से आई। अभी बाबा बोले व्यर्थ संकल्पों को खत्म करो, व्यर्थ संकल्प हमको क्यों आयें! संकल्प से सेवा हो रही है, संकल्प ऐसे हो जो स्व और सेवा दोनों इक्वेटे हो जायें। संकल्प में स्व, स्व में बाबा है, उसमें सेवा समाई पड़ी है। इतना ध्यान अपने ऊपर रखेंगे तो बाबा साथी बनकर, साक्षी होकर प्ले करने में मदद करेगा। याद करने की मेहनत नहीं है, पर बाबा के साथ का अनुभव औरों को सुख देता है। मेरे में जो कमी कमजोरी है वह मर्ज हो जाए, जो मेरा साथी है, वह दिखाई दे।

कुछ भी है, यह किसने कहा? भले इसने भी कहा तो भी तुम्हारा भला हो जायेगा। मेरा बाबा कल्याणकारी है, हमारे को

क्या करने का है? जैसे किसके अवगुण पर नफ़रत आती है, ऐसे अपने अवगुण पर नफ़रत करो। जिसको नफ़रत आई यह बड़ा अवगुण है। देखा गया है - घृणा दृष्टि जरा भी किसके लिए भी है, मेरी दृष्टि में घृणा है तो दया, दुआ दृष्टि बदल गई। दया और दुआ दृष्टि सदा रहे, जैसे मेरे बाबा की है। दया और दुआ दृष्टि से हमारी पालना हुई है। कभी बाबा ने मम्मा ने घृणा नहीं रखी। कैसा भी है, हमको कहेगा बच्ची संग की सम्भाल करो। संग अच्छा रखेंगे तो तुम्हारा भला है। हम किसके संग में रहें, तो दूसरे को भी बाप के संग का रंग लग जाए।

बाबा से जो 4 रूप दिखाई देते हैं, एक मेरा साकार बाबा, उसने एडाप्ट किया, गोद बिठाया फिर सामने बैठ पढ़ाया। आज दिन तक बचपन नहीं भूला है। बचपन के दिन भुला न देना...। बचपन का दिन भूला माना सिरदर्द। हमको क्या करना है? बच्चे हैं बाबा के, तो बाबा शकल से दिखाई देता है। पढ़ने के समय आंख खोलकर सामने बैठकर पढ़। तुम गुलाब का फूल बच्चा हो ना, बाबा माली है, कोई कांटा न हो। साकार में शिवबाबा बैठकर हमको पढ़ावे। फिर क्या बना रहा है वह अपनी स्थिति से दिखा रहा है। बाबा को कभी देहधारी रूप से नहीं देखा है, सदा अव्यक्त चमकता हुआ देखा है। हड्डियां हैं

नहीं। दधीचि ऋषि बन हड्डियां दे दी। सेवा दिल से की है। चौथा भविष्य, कृष्ण भी दिखाई पड़ता फिर नारायण स्वरूप का नशा सदा देखा। ऐसे बाबा को चारों रूप से देखते बाबा के पास रहे हैं। इतनी हमें विदेही बनाने की, देह-अभिमान छुड़ाने की मेहनत की, फिर सारा प्यार जो भर दिया वह अन्तिम जन्म तक भूले नहीं हैं। इस साकार के साथ तुम 84 जन्म पार्ट बजाओ। वह कहता मैं दुःख सुख में नहीं आऊंगा। अच्छा है। हमने कभी दुःखी होकर भगवान को याद नहीं किया है।

इन अन्तिम घड़ियों में त्याग, तपस्या वाली सेवा करो, इसमें मनी टाइम एनर्जी सब बचेगा। जो बाबा ने आदि से कराया है वही हम करेंगे, टाइम मनी सब सफल हो। हमारी एनर्जी ऐसी हो जो कम से कम अपने आपको तो सम्भाल सकें। अपनी स्थिति को तो सम्भाल सकें, साथियों को तो दे सकें। कोई सामने आये तो मुस्करा तो सकें। मुरझाये हुए रहेंगे, मुस्करायेगे नहीं तो सेवा क्या करेंगे।

जो बहुतकाल का होगा वह अन्तकाल में सबको नज़र आयेगा। अभी मेरे अन्दर क्या है, वह पता नहीं पड़ता है, अन्तकाल का सबको पता पड़ जाता है। तो यह अपने आपको ध्यान रखना है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

अपनी जीवन से अनेकों को प्रेरणा देना - यह भी वरदान प्राप्त करने का साधन है (1999)

1) हम एक तरफ राजऋषि हैं दूसरे तरफ संगम के सिंहासन पर बैठने वाली महारानियां। बाबा ने कहा है कि भविष्य के सिंहासन पर तो राजा रानी बैठेंगे लेकिन मेरा दिलतख्त इतना विशाल है जो मेरे इस दिल तख्त पर सभी बच्चे बैठ सकते हैं, जिसने इस संगम का सिंहासन जीत लिया उसने विश्व का सिंहासन जीत लिया। तो हरेक अपने दिल से पूछे कि मैंने दिलाराम के दिल का सिंहासन जीत लिया है? दिखाते हैं लव-कुश ने राम को जीता। यह भी हमारे सामने एक दृष्टान्त है। हम बच्चों ने दिलाराम के दिल-तख्त को जीता है। दिलाराम बाप की दी हुई सेवा पर दिल से तत्पर हैं। दिल भी हमारी बुद्धि के अन्दर आती। जैसे प्राण माना आत्मा वैसे दिल माना आत्मा।

2) गीता के महावाक्य हैं - “नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप”। मेरा यह सवाल उठता नष्टोमोहा बन सर्विस पर आये हैं या नष्टोमोहा बनने सर्विस पर आये हैं? स्मृति-स्वरूप बनकर मैंने सोचा यह

पुरानी दुनिया क्या है, ये जीवन क्या है, इसमें मोह क्या रखें? ऐसा समझकर आये या मोह नष्ट करने के लिए आये?

3) मैंने स्मृति स्वरूप होकर स्वयं को सेवा में लगाया है, माना ज्ञान स्वरूप होकर सेवा में लगे हैं। उनके साथ ही अपने सर्व सम्बन्ध, माता, पिता, बन्धू... आदि सब हैं। बाबा कहने से बाबा के गुण, शक्ति, सारी महिमा सामने आ जाती है। बाप भगवान है माना नॉलेजफुल है, सर्वशक्तिमान है अर्थात् सर्वशक्तियों का वर्सा देने वाला है। ऐसे बाबा को सर्व सम्बन्धों से जानकर, सोच समझकर मैं समर्पित हुई हूँ या पांव इस तरफ रखा सिर दुनिया तरफ है? भक्ति मार्ग में सिर झुकाते हैं, दण्डवत प्रणाम करते हैं, माना पूरा ही समर्पण करते हैं। तो स्वयं से पूछो - मैं पूरी झुकी हूँ अर्थात् पूरा समर्पित हूँ?

4) वरदान तब मिलता है जब पूरा दान करते हैं, बाबा ने ईश्वरीय अनादि नियम बनाया है, एक दो तो दस पाओ, धरती को एक

दाना देते हैं तो 100 देती है, अब पूछो मैं पूरा दानी बना हूँ? भक्ति में भी ईश्वर अर्पणम या कृष्ण अर्पणम करते हैं, तुम किसी मनुष्य को दान नहीं देते, तुम सब मुझे शिवबाबा को दान करते हो तब मेरे से तुम्हें वरदान मिलता है। ज्ञान का, शक्ति का, गुणों का, यह खजाना तुम बांटते हो। जितना-जितना औरों को बांटते उतना स्वयं भी भरपूर होते हैं। एक दिया 100 पाया। इतना जमा होता है, जिसे कहते हैं वरदान मिलता है। तो बाबा हमें दान देकर फिर हमसे दान कराता है। फिर वह और ही 100 गुणा भरतू होता है। तो जो भरतू होता है वह है वरदान।

5) जैसे किसी गरीब को दान दिया उसने सिगरेट पी लिया तो हमारे ऊपर बोझ चढ़ा, इसी तरह बाबा ने मुझे दान दिया और मैंने बाबा के मिले दान का उपयोग अगर ठीक नहीं किया तो वरदान की बजाए श्राप हो जाता है। यह निर्णय शक्ति चाहिए। मान लो हमने किसको मुरली सुनाई, ज्ञान दिया, बाबा की याद का अनुभव कराया, जिससे आत्मा को बड़ी खुशी हुई, उसने हमें दुआ दी, यहाँ तक तो ठीक, लेकिन जब मैंने कहा ये मेरे से बहुत प्रभावित हुआ, बहुत खुश हो गया, तो यह जमा नहीं किया, स्वीकार कर गंवा दिया। अहम् भाव आया तो बैलेन्स बराबर। जो जमा किया वह माइनस हो गया - खत्म। वह दान वरदान नहीं रहा। ऐसे ही मैं कोई की बहुत मीठी सेवा कर रही हूँ, बहुत अच्छी तरह समझाती हूँ, समझाते-समझाते आत्मा की स्थिति में स्थित हो जाती हूँ, उसे भी अनुभव कराया, शान्ति का लाइट अवस्था का साक्षात्कार कराया, परन्तु दूसरे क्षण उसने मेरे देह-अभिमान की अवस्था देखी, तो एक तरफ हाइएस्ट स्टेज, दूसरे तरफ एक क्षण में लोएस्ट स्टेज। तो क्या सोचेगा? वरदान भी दिया फिर वापस भी ले लिया - क्या हुआ? जमा तो नहीं हुआ ना।

6) हरेक अपने से पूछो कि मैंने अपनी जीवन त्यागी बनाई है? त्याग की परिभाषा बहुत बड़ी है, जितना हम त्यागी बनेंगे उतना ही तपस्वी बनेंगे। बाबा ने कहा योग न लगने का कारण नाम-रूप में फंसते हैं, देही-अभिमान नहीं बनते, यह हमारी चाबी है, देखना है हम कहाँ तक देही-अभिमान बने हैं? अगर मेरे में जिद का स्वभाव है, नाम तो है जिद, लेकिन छोटा जिद का स्वभाव क्या मुझे वरदान प्राप्त करायेगा? जैसे मुझे कोई कहता - ये कार्य करना है, मैं जिद के स्वभाव के कारण कहती मैं नहीं कर सकती। लेकिन यह कार्य बाबा का है, वह मुझे करने के लिए कहता, उससे अनेक आत्माओं को हर्ष मिलता, उत्साह मिलता, कितना लाभ होगा। ना कर दिया तो उन सबका बोझ मेरे ऊपर चढ़ गया। नाम है जिद, परन्तु उसमें कितना नुकसान

हुआ।

7) बाबा ने हमें अमृतवेले से रात तक हर कर्म करने के जिम्मेवार बनाया है, किसी कारण से अमृतवेले नहीं उठते। परन्तु ये भी सोचा कि मेरे उठने से कितनों को प्रेरणा मिलती है? ये प्रेरणा मिलना ही वरदान है। ऐसे ही अनासक्त-पन की जीवन देखकर सब सीखेंगे। थोड़ी घड़ी के लिए मेरे में सुस्ती है, तबियत के कारण या मेरी नेचर सुस्त है, क्या मेरी सुस्ती की नेचर औरों को प्रेरणा देगी या उसे बेमुख करेगी? सुस्ती के कारण मैं किसी को बेमुख करूँ या मैं अपना मूड आफ अर्थात् स्वीच आफ करके अंधकार कर दूँ, तो उसका कितना बुरा प्रभाव दूसरों पर पड़ेगा। कई तो बड़े फलक से कहते हैं कि आज मेरी मूड आफ है। जैसे बाबा ने कहा ओम् शान्ति। हम कहते मूड-शान्ति। अगर कोई कारण से मूड आफ भी हुई तो उसे बाबा की याद से सेकण्ड में खत्म कर दो। आज साइन्स की शक्ति वाले सेकण्ड में अंधकार से प्रकाश कर देते हैं, हम साइलेन्स की शक्ति से मूड शान्त नहीं कर सकते?

8) हम सब ओपेन थियेटर में बैठे हैं, हमें सारी दुनिया देख रही है, हम बाबा के बच्चे हैं, नूरे रत्न हैं, आंखों के तारे हैं, बाबा ने हमें नयनों पर बिठाया है, हम आप साधारण नहीं हैं। लेकिन हम असाधारण अलौकिक हैं, हमारा बाबा निराला, हम भी निराले, बाबा हमेशा कहते बड़े तो बड़े छोटे सुभान अल्ला, आप सब बाबा की छत्रछाया, शक्ति के नीचे बैठे हो, नहीं तो आज का जमाना बहुत खराब है। आप सब एक दृढ़ संकल्प लेकर बाबा की गोद में आये हो। तो अपने से रुह-रिहान करनी है कि हमें बाप के समान बनना है। सम्पन्न बनना है, समीप रहना है।

9) जग को परिवर्तन करने वालों को पहले स्वयं को परिवर्तन करना है। मेरे जीवन का हमेशा लक्ष्य रहता बाबा की पहले दिन की श्रीमत है - आज्ञाकारी, फरमानबरदार, वफादार। दूसरा है त्याग, तपस्या और सेवा इन सबका आधार है - श्रीमत। श्रीमत में रहने से हमारी तथा सर्व की सेवा है, इसमें ही कल्याण है।

10) ईश्वरीय मर्यादा कहती है तुम्हें अन्तर्मुख रहना है, मेरी पसन्दी है बाहरमुखता, अगर मैं अन्तर्मुख न रहूँ तो दूसरों को कैसे कहेंगे। तो ये कौन सी मैंने सर्विस की? बाहरमुखता की मेरी नेचर है, अन्तर्मुखता बाबा की श्रीमत है, तो मुझे आज्ञाकारी बनना है। अगर नहीं रहती हूँ तो क्या मैंने आज्ञा का पालन किया या उल्लंघन किया? आज्ञा पालन करने में बाप की आशीर्वाद मिली, न करने में श्राप। अच्छा - ओम् शान्ति।